arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:05 PM Page 146

डॉ. महेश चंद्र शर्मा

# राजनीतिक कर्मयोगी

**दीनदयाल उपाध्याय की हत्या के बाद एकात्म मानववाद के अनुसंधान के लिए नानाजी ने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की थी। वे रचनात्मक, वैचारिक और राजनीतिक कार्यों का त्रिवेणी संगम बन गए थे।**

दैनिक भास्कर

दैनिक भास्कर sunday राजतंत्र

राजनीतिक कर्मयोगी

दीनदयाल उपाध्याय की हत्या के बाद एकात्म मानववाद के अनुसंधान के लिए नानाजी देशमुख ने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की थी। वे रचनात्मक, वैचारिक और राजनीतिक कार्यों का त्रिवेणी संगम बन गए थे।

नानाजी देशमुख वह शख्सियत हैं जो बीस साल की उम्र में महाराष्ट्र छोड़कर उत्तर प्रदेश आए, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रचारक के नाते। आज देशभर में विद्या भारती के नाम से जो स्कूल चलाए जा रहे हैं, उसकी शुरूआत नानाजी ने ही सरस्वती शिशु मंदिर के रूप में की थी। जब भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई तब उत्तर प्रदेश में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के साथ ही नानाजी को राजनीतिक क्षेत्र में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। वे दीनदयाल के निकटतम सहयोगियों में से थे। उनके ही नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में भारतीय जनसंघ को आरंभिक सफलता प्राप्त हुई। देश में गैरकांग्रेसवाद का जो पर्व शुरू हुआ, उसमें डॉक्टर राममनोहर लोहिया और दीनदयाल उपाध्याय को साथ लाने का श्रेय नानाजी को ही दिया जाता है। भारतीय जनसंघ के एक प्रशिक्षण वर्ग में नानाजी ने राममनोहर लोहिया को दिनभर के लिए आमंत्रित किया था। राममनोहर लोहिया और दीनदयाल उपाध्याय का यह मिलन अंततः देश में गैरकांग्रेसवाद का जनक बना। दीनदयाल उपाध्याय की हत्या के बाद एकात्म मानववाद के अनुसंधान के लिए नानाजी देशमुख ने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की थी। वे रचनात्मक, वैचारिक और राजनीतिक कार्यों का त्रिवेणी संगम बन गए थे। जब देश में बिहार और गुजरात के छात्र आंदोलन हुए तब नानाजी ने न केवल उस आंदोलन में कूद पड़े, बल्कि बाबू जयप्रकाश नारायण को इस आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए तैयार किया। जब लोकतंत्र को समाप्त करते हुए इमरजेंसी लागू हुई, तब भूमिगत आंदोलन के नेता के रूप में नानाजी ने इमरजेंसी के सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया। जेल में रहते हुए देश के सभी गैरकांग्रेसी नेताओं को संगठित करने का काम किया और परिणामस्वरूप जनता पार्टी अस्तित्व में आई। तानाशाही आरोपित करने वाली इंदिरा कांग्रेस पराजित हुई और देश में लोकतंत्र एक कदम आगे बढ़ा। पहली गैरकांग्रेसी सरकार दिल्ली में स्थापित हुई। उन्होंने मंत्री बनने से इनकार कर दिया और अपने-आप को संगठन के कामों और दीनदयाल शोध संस्थान के कामों में लगा दिया। जब उन्होंने जनता पार्टी में नेताओं को आपस में कलह करते हुए देखा तो राजनीति छोड़ने की घोषणा कर दी।

उन्होंने आह्वान किया कि साठ से ऊपर के नेता दलगत राजनीति छोड़ दें और नई पीढ़ी को कमान दें। उन्होंने मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर चित्रकूट में ग्राम स्वावलंबन और समग्र विकास के प्रकल्प प्रारंभ किए। उनके कामों को देखकर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि किसी को यह देखना हो कि बिना सरकारों के भी विकास होता है तो उसे चित्रकूट जाकर देखना चाहिए। नानाजी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के तौर पर आजन्म ये सब काम किए। प्रभाष जोशी जब नानाजी के प्रकल्पों को देखकर आए तब उन्होंने लिखा कि इस जीवट के ललाट पर तिलक करो। दीनदयाल के एकात्म मानव दर्शन को व्यवहार में उतारने वाले नानाजी एक अद्भुत साधक थे। वे अंतिम सांस तक सक्रिय रहे और अपनी मृत्यु को भी उन्होंने अपने शरीर को मेडिकल शोध के लिए दान करके मूल्यवान बना दिया। ■

**लेखक परिचय**

*लेखक पूर्व राज्यसभा सदस्य तथा वरिष्ठ स्तंभकार हैं। एकात्म मानवदर्शन के पहले शोधार्थी होने के साथ-साथ लंबे समय तक उन्हें नानाजी के सान्निध्य में काम करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। वह संस्थान के सचिव भी रहे।*



# नानाजी नहीं, सबसे बड़ी संपदा छिन गई

रंगन दत्ता

The Statesman

The poorer for Nana ji's passing

Ranjan Dutt

27 फरवरी को चित्रकूट में 94 वर्ष की अवस्था में नानाजी देशमुख के निधन के साथ ही देशभक्तों की वह पूरी पीढ़ी समाप्त हो गई, जो आजादी के संघर्ष के साथ पली बढ़ी, लेकिन जिसने ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा करने के लिए राजनीति से बाहर रहना पसंद किया। 1977 में जब जनता पार्टी सत्ता में आई थी, तब नानाजी को केबिनेट मंत्री के पद की पेशकश की गई थी। उन्होंने उससे इनकार कर दिया, क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि भारत की सूखी धरती, जहां प्राणलेवा गरीबी मजबूती से जड़ें जमाए बैठी है, का तकनीकी और सामाजिक कायाकल्प करना कहीं ज्यादा चुनौतीपूर्ण है। गरीबी से दबे गोंडा जिले को अपने कार्यक्षेत्र के तौर पर चुनने का फैसला सरल नहीं था, जहां चंद दाने उगा सकने की इबती आस में वर्षा आधारित खेती लोगों का मुख्य आसरा था। नानाजी और दीनदयाल शोध संस्थान के उनके साथियों ने गरीब ग्रामीणों के साथ काम किया और साधारण सस्ती तकनीकों से उन्हें परिचित कराया, जिससे उपज और खेती से आमदनी में वृद्धि हो सके। नानाजी ने मवेशियों, भेड़ों, बकरों और कुक्कुट की देसी प्रजातियों का परम्परागत तकनीकों से युक्त आधुनिक तरीकों से नस्ल-रक्षण पर जोर दिया, ताकि उपज और आमदनी में तेजी से और टिकाऊ ढंग से वृद्धि हो सके। साथ ही उन्होंने दक्षता अर्जित करने और विकास व समाज के विषयों पर निर्णय ले सकने की सामाजिक क्षमता के निर्माण पर भी जोर दिया।

गोंडा के परिणामों से उत्साहित होकर नानाजी भगवान राम की धरती और सूखाग्रस्त बुंदेलखंड के एक भाग, चित्रकूट की ओर बढ़े। वहां उनके प्रयास आसपास के 500 गांवों पर केन्द्रित थे, ताकि कानूनी विवादों की समाप्ति, तकनीकी और सामाजिक सेवाओं के जरिए प्राकृतिक संसाधनों और जैव विविधता के संरक्षण और कृषि-उत्पादकता और आमदनी में वृद्धि के जरिए वहां के निवासियों को आर्थिक, सामाजिक और पारस्परिक तौर पर आत्मनिर्भर बनाया जा सके। समुदाय और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और ग्राम के विकास के नानाजी के इस प्रयोग ने पूर्व राष्ट्रपति डा. कलाम का भी ध्यान आकर्षित किया। यह प्रयोग आज भी पूर्वोत्तर के लिए एक सबक है।

नानाजी गांवों में मौजूद जल, वानस्पतिक और जैविक संपदाओं को बेहद महत्वपूर्ण मानते थे और उनके संरक्षण के प्रति चिंतित थे। वह वहां प्रस्तावित 60,000 मेगावॉट की जलविद्युत परियोजना के लेकर भी चिंतित थे, क्योंकि वह यह मानते थे कि इससे पारिस्थितिकी, पर्यावरण और वनवासियों की जीवनदाता प्रणालियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। नानाजी पूर्वोत्तर और मध्यभारत के मैदानों में भी वनों के संरक्षण के प्रखर समर्थक थे। हरियाली को बनाए रखने की देशज परम्परा में उनका अटूट विश्वास था, जो वैज्ञानिक साक्ष्यों पर आधारित था और समय की कसौटी पर खरा उतरा था और हो चुके नुकसान की पूर्ति के लिए जिसकी पुनर्थापना आवश्यक थी। मेघालय के चेरापूंजी का गर्मी के महीनों में लगभग पूरी तरह रेगिस्तान में बदल जाना और बरसने वाले पानी में कमी होना, इस बात का संकेत है कि कोयले और लाइमस्टोन की अंधाधुंध खुदाई इस पर्यावरणीय तौर पर नाजुक क्षेत्र में क्या कहर ढा सकती है।

चित्रकूट, गोंडा और महाराष्ट्र के बीड जिलों में ग्राम विकास के लिए अपनाई गई क्लस्टर पद्धति पूर्वोत्तर के लिए भी प्रासंगिक है। नई हाथों-हाथ प्रशिक्षण पद्धति से ग्रामीण युवकों द्वारा मूल्य संवर्धित उत्पादों और सेवाओं के सृजन की खेतों के परे के क्षेत्र और विशेषकर हस्तशिल्प उद्योगों और उद्यमिता विकास के विस्तार के प्रयोग को चित्रकूट में मिली सफलता पूर्वोत्तर में दोहराए जाने योग्य है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के कृषि विज्ञान केन्द्रों को जिस प्रकार फसलों की विविधता और स्थानीय परिस्थितियों में उपज बढ़ाने, ग्रीन हाउस तकनीक से गैरमौसम काल में सब्जियों का उत्पादन करने के केन्द्रों में बदलने में जैसी सफलता मिली है, उसे भी दोहराया जा सकता है। इसका प्रभाव ग्रामीण उत्पादन में वृद्धि और तकनीक को अपना सकने में ग्रामीण क्षमता में वृद्धि के रूप में निकला।

नानाजी का दृढ़ विश्वास था कि संभावनाहीन अर्थव्यवस्था विकास नहीं होती और यह हमेशा जोर देते थे कि सामाजिक तानावाना ही आर्थिक विकास प्रक्रिया का मर्म है। यह विचार वास्तव में एक वीजमंत्र है। कृषि विज्ञान केन्द्रों की क्षमता का पूरा दोहन न हो पाने का कारण भी यही है और इसका अभाव ही पूर्वोत्तर में विकास प्रयासों की असफलता का एकमात्र सबसे बड़ा कारण है। ■

**लेखक परिचय**

*लेखक पूर्व आईएएस अधिकारी हैं। कपार्ट के महानिदेशक रह चुके हैं। संप्रति, प्रधानमंत्री के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय में सलाहकार हैं।*